International Journal of Applied Research 2020; 6(11): 157-159

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 157-159
www.allresearchjournal.com
Received: 12-08-2020
Accepted: 14-09-2020

समीर विश्वाल
शोधछात्र, संस्कृत विभाग, पुदुच्चेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी, तमिलनाडु, भारत

Corresponding Author:
समीर विश्वाल
शोधछात्र, संस्कृत विभाग, पुदुच्चेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी, तमिलनाडु, भारत

ललीतराघव महाकाव्य - एक विमर्ष

समीर विश्वाल

साराशं
प्राचीन काल में जव लेखन सामग्री उपलब्ध नहीं था तव उस समये दार्शनिक, काव्यशास्त्रज्ञ, व्याकरण,समाजसुधारक स्वस्वविचार आदि को अपने हाथोसे लिखकर प्रस्तुत करते थे । उनमें से श्रीनीवास विरचीत ललीतराघव माहाकाव्य अन्यतम है । इस ग्रन्थ अभितक् प्रकाशित नही हुआ है, लेकिन अबतक बो संग्रहालय में सुरक्षीत है । इस ग्रन्थ 22 (द्वादशविंशति) सर्ग विशिष्ट एक महाकाव्य हे । इस महाकाव्य संपूर्ण रामायण पर आधारित है । अगर मातृका का पाठसंपादन प्रक्रिया अवलम्बन करेगें तो पुरातन ज्ञानवैभव का विनाश नही होगा । इसलिए लुप्तमातृका का संस्कुतवाङ्गमय मे पुर्नजीवित करने केलिए इस शोध पत्र प्रस्तुत किया जा रहा है ।

मुख्य शब्द- ललीतराघव महाकाव्य, श्रीनिवासरथ, श्रीनिवासरथविजय नाटिका, नरसिंह दीक्षित, रामायण ।

प्रस्तावना
संस्कृत साहित्य जगत में महाकाव्य सबसे सर्वोत्कृष्ट और अन्यतम है । सप्तम शताब्दी में महाकवि माघ शिशुपालवध में महाकव्य के वारेमे वर्णना किए हैं,यथा-अस्ति यत महाकाव्य सर्वातोभद्र,चक्रं,गमुत्रकं, इत्यादि श्लोकमे समन्वित । महाकाव्य काव्य का एक भेद है । महाकाव्य आकार दृष्टि से बहुत बडा है, इसलिये इसे महाकाव्य कहा जाता है । उन महाकाव्यों में से रामायण महाकाव्य अन्यतम है ।
संस्कृत साहित्य में रामायण पद वाल्मीकि द्वारा रचित आदिरामायण के नाम से प्रसिद्ध है । रामायण एक ऐसा महाकाव्य है जिसका संस्कृत निबन्ध तथा काव्य उपस्थापना के विषय एसा नही की किसिको ज्ञात नहीं हो, सभि को भली भांति रामायण की महत्वपूर्ण विषय मालूम है ।
इस रामायण पर आधारित श्रीनीवासरथ [1] के द्वारा रचित ललीतराघव महाकाव्य [2] अन्यतम है । यह माहाकाव्य 22 सर्ग विशिष्ट है । जैसे कि रामायण महाकाव्य मे केवल युद्ध विषय वर्णन नही हे वल्कि अलंकार और भाषा के प्रकृति आदि रचना की गयी है । एसे हि श्रीनिवासरथ द्वारा रचित ललीतराघव महाकाव्य [3] भी इसि तरह रचित है ।

ललीतराघव महनीयता-
शास्त्रों के बीच ऐसा भी कुछ शास्त्र है, जो की पुस्तक के रूप मे उपलब्ध नहीं है । फिर भी वह शास्त्र पाण्डुलिपि के रूप में मातृकालय में उपलब्ध है । उन शास्त्रों में से ललितराघव महाकाव्य अन्यतम है, जो की 22 सर्ग [4] विशिष्ट है । रामायण जो की प्राचीन काल से प्रसिद्ध है और लोगों के मार्गदर्शन में प्रमुख भूमिका निभाता है । इसलिए यह महाकाव्य का संपादन आवश्यक है ।

कवि परिचय-
संस्कृतवाङ्गमय में कुछ ऐसे भी कवि हैं जिनके नाम, देश, काल आदि के बारे में कुछ भी उपलब्ध नहीं है । फिर भी कुछ तथ्य हमारे पास है जो की प्राचीन ग्रंन्थ टीका आदी में वर्णित है । ग्रन्थ का अध्ययन करने से उन कवियों के नाम, देश आदि के वारे में पता चलता है । उसी तरह नरसिंह दीक्षित के द्वारा रचित

[1]. NCC VOL.XXXVI,P.60
[2]. NCC VOL.XXVI,P.204
[3]. M.KRISHNAMACHARIYA-HCSL-P.NO-305
[4]. GOML -MT.4350

श्रीनिवासरथविजय नाटिका [5] में इस ग्रन्थ का लेखक के वारे में प्रमाण मिलता है। फिर भि अभीतक उस नाटिका पुस्तक के रुप में उपलब्ध नहीं हुआ है। मिले हुए तथ्य के मुतावक विजय नाटिका में श्रीनिवास के सद्गुण के विषय में वर्णित है। इस नाटिका में चार अंक है और चारों अंकें में से तृतीय अंक में श्रीनिवासरथ के समय के वारे में लिखित है । सकएरा के मुताबक उनका काल – नेत्रदंतिशरचन्द्रशकाब्दि है, उस काल को 1582 ई.सी मानि जाति है । श्रीनिवास के जन्म के वारे में यह तथ्य मिलता है कि उनका जन्म खोर्धा नगरी में हुआ था।

ललीतराघव महाकाव्य –

रामायण आधारित ललितराघव महाकाव्य एक सरल, सुबोध और व्यवहार उपयीगी ग्रन्थ है। इस महाकाव्य में रामायण के घटनाक्रम और उत्तम चरित्र को वर्णन किया गया है । 22 सर्ग विशिष्ट यह महाकाव्य [6] का हर एक सर्ग विभिन्न नाम से परिचित है । राजकोशिक संवाद नामकप्रथम सर्ग में दीलिप के पुत्र रघु का राजयोग के विषय वर्णित है। महाकाव्य का द्वितिय सर्ग को राघवप्रदान नाम से कवि द्वारा सूचीत किया गया है। इस महाकाव्य को ललितराघव महाकाव्य क्युं कहा जाता है और इस नाम का सार्थकता के वारे में सविस्तृत रूप में प्रतिपादन किया गया है।

तृतीय सर्ग को ताडका निधन नाम से जाना जाता हे । इसमें यह वर्णना किया गया है कि त्रेतया युग में ताडका नाम कि एक राक्षसी, देवी देवताओं केलिये यज्ञ करनेवाले ऋषि मुनियो को तंग करति थी, इसीलिए विश्वामित्र के शिष्य राम लक्ष्मण मिलकर ताडका का अंत किया था। चतुर्थ सर्ग को यज्ञ रक्षा नाम से जाना जाता है। इसमे राम द्वारा विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा विषय मे वर्णित् दियागया है। राम लक्ष्मण निरतंर, और दृढता पूर्वक ६ दीन ६ रात विश्वामित्र के यज्ञ कि रक्षा किया और यज्ञ में विघ्न डालने वाले राक्षसो का वध किया।

धर्नुभंग नामक पंचम सर्ग में राम द्वारा शिव धनुष तोडने का विषय व्याख्या किया गया है। राम ने सीता स्वयंवर में शिव धनुष तोडा था । इसके वाद राम और सीता जी का विवाह संपन्न हुआ था। षष्ठ सर्ग को सीता विवाह नाम से जाना जाता है। इस सर्ग में सीता जी और राम का विवाह कि कथा है। मार्गशीर मास में मर्यादा पुरुषोत्तम् राम एवं सीता जी का विवाह शुक्ल पक्ष कि पंचमी तिथि को मिथिला राज्य जनकपुर में हुआ था। सप्तम सर्ग में सीता जी का गृह प्रवेश के बारे मे लिखा गया है । राम मिथिला राज्य जनकपुर में सीता स्वयम्वर मे शिव धनुष तोडकर सीता जी के साथ अयोध्या लोटे तभी अयोध्या के राजभवन मे उनका गृह प्रवेश हुआथा । अष्टम सर्ग को राम अभिषेक कहा जाता है। इस में राम जी का राज तिलक होता है । जिसमें वशिष्ठ ऋषि सबसे पहले राम जी का तीलक किया ओर फिर सारे ब्राह्मण तिलख करते हें।

राज परिभवन त्याग इति नवम सर्ग को कहा जाता है। इसमें वर्णित है कि रामायण के अनुसार माता कैकेयी ने महाराजा दशरथ से राम के लिए 14 वर्षों का वनवास मांगी थी और दशरथ के प्रतिज्ञा पालन करने के लिए राम जी अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन को चल दिये थे। राजनिधन अनुविधान दशम सर्ग है। इसमें राम का वनवास जाने के बाद अयोध्या का राज्य संभालने की वारेमे वर्णित हे। अयोध्या वासी राम को हि अपनी राजा मान चुके थे। बिना राजा के राज्य मे शत्रु आक्रमण डर रहेगा इसलिये वशिष्ट ने भरत को राजकार्य संभालने का सलह दिया लेकिन भरत ने इंकार कर दिया।

दशरथ संस्कारनाम का इस एकादश सर्ग में कहा जाता है की, राम के वनवास जाने के बाद राजा दशरथ पुत्र वियोग मे स्वर्ग प्राप्ती हुए। वाल्मीकि रामायण के मुतावक राजा दशरथ का अंतीम संस्कार भरत और शत्रुघन ने किया था, लेकिन उनका पिंडदान राम ने नहीं वल्कि सीता ने किया था। द्वादश खर सन्य विध्वशं सर्ग नाम से नामित है। राम की वनवास काल मे बहुत राक्षस,राक्षसी उन्हे आक्रमण किए थे लेकिन रामने सभिका वध करके उनका विनाश कर दिया। इस विषय को यहाँ उन्मेचित किया गया है। सीता अपहरण सर्ग में वर्णन किया गया है कि रावण अपनी बहन सूर्पणखा का बदला लेने के लिये माता सीता का अपहरण किया था। रावण छल से एक भिक्षुक का रूप धारण करके अपने साथ सीता को लंका ले गया था। चतुर्दश सर्ग कपि सेना आगमन नाम से उल्लेखित है। इस सर्ग में लिखा गया है कि सीता माता कि खोज में राम,लक्ष्मण के साथ सुग्रीव,नल,नील,अंगद और कोटि वानर सेना सामिल हो गए थे। इसि लिए इस सर्ग को कपि सेना आगमन कहा गया है।

सीता गवेषण इस सर्ग में रचित किया गया है कि सीता माता के खोज में राम लक्ष्मण के साथ सुग्रीव, जाम्बवान,अंगद,नल,नील चार दल बनाकर चारों दिशाओं में चल दिए। राम को गिध्वराज जटायु से पता चलता है रावण ने सीता को दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर ले गया है । इसके बाद सबसे शक्तिशालि हनुमान जी समुद्र लांघकर सीता माता की खोज करने निकल पडे। सीता दर्शन नाम का इस सर्ग से सीता के खोज में हनुमान लंका पहुँच जाते है। वहां विभीषण सीता माता कि पता बताते हैं। रात में वे अशोक वाटिका पहुँचते है। सीता जी के पास जाकर अपनी परिचय देते हुए और भगवान राम द्वारा दी गई मुद्रिका सीता के सामने रखदेते है, जिसे वे पहचान लेते है।

सप्त दश सर्ग को लंकादाह कहा जाता है। इसमे हनुमान सीता जी के आज्ञा लेके अशोक वटिका में फल खाने चला जाता और रावण के राज उद्यान का तहस नहस कर दिआ इसलिये उनके पुँछ पर आग लगादेते है पुँछ मे आग लगते ही हनुमान पुरी लंका को विध्वश कर देता हे। विभीषण परित्याग सर्ग मे यह उन्मेचित है कि विभिषण रावण को पराई स्त्री के हरण कि महापाप बताते हुए सीता जी को लौटा देने कि सलाह देकर हमेशा धर्म कि शिक्षा देता लेकिन विभीषण को राक्षस कुल का कलंक बताकर रावण ने लंका से निकाल दिया। उनविंश सर्ग को समुद्र प्रतरण नाम से जाना जाता है। लंका पहुँचने के लिये समुद्र लांघना पडता था इसलिए समुद्र पर पुल बाँधने लगे । उनमें से सर्वश्रेष्ठ वानर नल और नील पत्थर समुद्र पर फेंकते थे और उसपर पहले श्रीराम लिखते थे तो वह पत्थर डुबते नहीं थे। अंत मे पांच दिन के बाद पुल निर्माण हुए और वे लंका पहुँचे।

विसं सर्ग लंका विरोध नाम से नामित है। इस सर्ग में वानर दल को रावण के सैन्य दल के द्वारा लंका अवरोध के बारे मे वर्णना किया गया है । नागपाश वीमोक्ष सर्ग मे रावण पुत्र मेघनाद रणभूमि में राम लक्ष्मण पर दिव्य वाण चलाया जो नागपाश में बदल गया। इसमें बंध कर राम लक्ष्मण मूर्छित हो गए। किसी को भी इसका उपचार नहीं पता था। इसका केवल एक ही उपचार था स्वयं गरुड देवता के द्वारा नागपाश को काटना। बल द्वय विमर्दन ललित राघव महाकाव्य का अंतिम सर्ग है। इस सर्ग मे लंका के सबसे बलशाली द्वय रावण ओर कुम्भकर्ण का वध के बारे मे लिखा है।

इस तरह ललीतराघव महाकाव्य, रामायण को आधारित करके विस्तृत रुप से लिखा गया है।

पाद टिप्पणि-

1. New Catalogue Catalogorum 36, P60.
2. New Catalogue Catalogorum 26, P204.
3. Krishnamachariya M. History of Classical Sanskrit Literature P305.

[5]. NCC VOL.XXXVI,P.60
[6]. GOML -MT.4350

4. Government Oriental Manuscripts Library (GOML)-MT-4350
5. A Triennial Catalogue Manuscripts 4, P5478.

सहायक ग्रन्थ सूची-

1. New Catalogue Catalogorum, (NCC). An alphabetical of Sanskrit and allied work and authors. University of Madras.
2. A Descriptive Catalogue of Sanskrit manuscript. (Kavya and Alankar). Government Oriental Manuscripts Library (GOML).
3. The Contribution of Kerala to Sanskrit Literature. K. Kunjunni Raja. University of Madras 1958.
4. History of Classical Sanskrit Literature. Kavyavinoda, Sahityaratnakara M. Krishnamachatiya, Tirumalai tirupati Devasthanams Press Madras 1937.
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, राष्ट्रियसंस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर, २००८।
6. संस्कृतसाहित्य रचना का इतिहास, आचार्य जयशङ्करत्रिपाठी (सम्पा.), साहित्य भण्डार प्रकाशनम्, ५०-चाहचन्द, इलाहाबाद, २०२२।